Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 4, July-Aug – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 02/07/2020 Accepted on : 18/07/2020 Publication Date: 31/08/2020

ज़ीरो रोड से दुबई तक फ़ैली उलझनें

Poet. Prof. Dr. Manu
Professor, Sree Sankaracharya Universityof Sanskrit, kalady
Regional Centre, Payyanur, Kerala.
Email - drmanughazal@gmail.com,

Dubai dreams to become the business hub of Western Asia.
So they permitted the people
from all over the world to come at Dubai
in search of Job and Business.
It's location in the eastern part of the Arabian Peninsula
on the coast of the Persian Gulf is very convenient for the realization of dream.
Even Living in the global culture of Dubai,
A woman will not get freedom as like a man.
But the untimely attack of Corona virus
Defaced and damaged the business ambitions of Dubai.
Smt. Nasira Sharma has drawn
the financial muddles and problems of the
Laborers and Workers of the Dubai in the Novel 'Zero Road'
. After the severe and unkind attack of Corona
the crisis of people depicted in the Novel 'Zero Road'
was increased many times

*

फ़िक्र ए मआश से
अदीब खड़ा है बाज़ार में
क्योंकि अदब भी सौदा है
दुनिया सौदे की मेला है
मेले में फिक्र सिर्फ़ मुनाफ़े की है।

- Poet. Prof. Dr. Manu

***** मेला : सं /स्त्री = मिलन /संगमस्थल; मेला : सं /पुं = चीज़ों की ख़रीद बिक्री .
* मआश (अ/स्त्री) : रोज़ी, जीविका

हर वतन में यह देखा जाता है कि राहों, मुहल्लों व बस्तियों के लिए बादशाहों, शाहों, राजाओ, शासकों, ज़मींदारों, राजनैतिक अगुओं ने परम्परा के अनुसार अपना अपना नाम दे दिया है और देते आ रहे भी हैं। फिलहाल यह भी देखा गया है कि पुराने नामों को बदल कर नए नाम रखने की आदत भी बढ़ती जाती है। राहों, मुहल्लों व बस्तियों केलिए अवामों का नाम रखना नदिरतरीन बात है, बाक़ी सब मामूली बात है। मगर अवाम इन्हीं का इस्तेमाल ज़्यादा करेगा। जो भी हो कुछ राहों का नाम भी खूब अजीब सा लगता है, वैसे ही ज़ीरो रोड नाम भी। " 82.5 ई रेखांश इलाहाबाद में ज़ीरो रोड के बीच से पार करता है और इसलिए इसे ज़ीरो रोड कहा जाता है। भारतीय स्टैंडर्ड टाइम इसी रेखा पर आधारित है"। (1) नासिरा शर्मा ने अपने एक उपन्यास केलिए 'ज़ीरो रोड' नाम रखा है, जो इलाहाबाद रेलवे स्टेशन से तकरीबन डेढ़ किलोमीटर दूरी पर है। जीरो एक रोड की शुरआत इलाहाबाद के 'चौक' इलाक़े के मशहूर घंडाघर से होती है और चंद्रलोक सिनेमा घर के चौराहे पर ख़त्म होती है तो 'ज़ीरो रोड' उपन्यास की दास्तान ज़ीरो रोड के 'चक' मुहल्ले से लेकर दुबाई कारोबारी शहर तक फैली हुई है। प्रवासी जीवन की मानसिकता, बड़े शहरों का अकेलापन व तन्हाइपन, दंगा फसाद आदि से ऊबे हुए आवामों

के समाज को 'ज़ीरो रोड' में नासिरा शर्मा ने खींच लिया है। इसकी खासियत यह है कि इसकी दास्तान में मध्य पूर्व एशिया और भारत की सामाजिक और तहज़ीबी हाल बेहाल का जिक्र हुआ है।

इस उपन्यास में सामाजिक हकीकत को बड़ी संजीदगी के साथ प्रस्तुत किया गया है। सामाजिक हकीकत के अलग-अलग पहलुओं को इसमें बखूबी दर्शाया गया भी है। कई तरह के सामाजिक हकीकत इसमें मौजूद है। इसमें मज़हब पर आधारित सामाजिक बुराइयों का बयान भी मिलता है। मध्यवर्गीय पारिवारिक जीवन के संघर्ष व तनाव, दबाव, औरतों की समस्याएं, दुबई जैसी जगहों की तहज़ीबी हकीकत, बेरोजगारी, मजदूरों की बेहाल आदि समस्याओं का वास्तविक चित्रण 'ज़ीरो रोड' में खींचा गया है। इलाहाबद और दुबाई की सांस्कृतिक विरासत, औरतों का दर्द, दंगा फसाद, ज़ातवाद से उत्पन्न भयावहता, आदि को नासिरा शर्मा ने इसमें खींच दिया है।

मार्क्स ने सिर्फ दो तबकों को ही मान लिया है। लेकिन औद्योगिक विकास के साथ ही साथ समाज में मध्य वर्ग की पैदायशी हुई है। पूंजीवादी या सर्मायेदारों की दुनिया में शासक वर्ग और उत्पादक वर्ग के बीच की कड़ी के रूप में मध्य वर्ग समाज में ज़िंदा है। अर्थ की कसर की वज़ह, इस वर्ग को हरदम संघर्षों का मुकाबला करना पड़ता है। यह आर्थिक दृष्टि से मज़बूत भी नहीं है और कमज़ोर भी नहीं है। इसलिए इस तबके के लोगों की मसाइल अलग है। ज़िन्दगी भर संघर्ष करते हुए वह अमीर नहीं बन जाता है। कभी कभी वह ग़ुरबत में गिर जाता है। संघर्ष करते करते ये लोग हताश हैं। ज़िंदगी के सही सुख से वह धोखा खाता है। यह वर्ग आज पारिवारिक, सामाजिक मर्यादाओं व आर्थिक विषमताओं के भवंडर में पड़ गया है। 'ज़ीरो रोड' में जगतराम इस मध्य वर्ग का नुमाइंदा किरदार है। पारिवारिक बजट को काबू में रखने केलिए घरवाले तड़पते रहते हैं। यशोधरा नामक नारी किरदार के दर्द आमेज़ जुमले से पता चलता है कि मध्यवर्ग के लोगों का जीना बिल्कुल दुशावर है। " सप्ताह भर के अतिथि सत्कार में कई महीने उन्हें हाथ संभालकर घर चलाना होगा। बहुओं और बच्चों के हाथों में चलते हुए कुछ रखना भी पड़ेगा। यह साल तो वैसे भी बीमारी में निकला। डॉक्टर की फीस और दवा के बचत के पैसे भी खत्म कर डाले वरना इन मौकों के लिए कुछ न कुछ जोड़कर रखती थी। " (2)

मध्य वर्गीय खानदानी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी खामी यह है कि अपने पास जो कुछ है। उसके कई गुना बढ़ा चढ़ा कर इज़हार करने में वे बेजोड़ हैं। राम प्रसाद के घर में दुबई से जब फोटोग्राफर रमेश शुक्ला और फिल्म निर्माता ईयाद आते हैं तो घर में 'नईम प्लेट' रखकर घर सजाने केलिए रामप्रसाद तैयार हो जाता है।

उपन्यास में राम प्रसाद, जगत राम, मुन्ना हाफिज और हामिद के खानदान मध्य वर्ग के नुमाईंदा किरदार हैं। इन किरदारों में राम प्रसाद एक सेवा निवृत लिपिक है। घर बार का सारा बोझ उसके सर पर ही है। बेटा बेरोज़गारी का शिकार है, इसपर राम प्रसाद के दिल में अपने बेटे से हमदर्दी के बदले नफरत की भावना उभर आती है। दूध पीने वाले अपने बेरोज़गार बेटे को देखकर राम प्रसाद चीख उठता है " अभी राम सक्सेना मिले थे। बता रहे थे कि तुम्हारे लाड़ले का नाम लिस्ट में नहीं है। यह घर थोड़ी है, होटल है होटल। रहो मुफ्त, खाओ मुफ्त, दूध बादाम खाके दंड पेलो। " (3) राम प्रसाद मध्यवर्गीय परम्पराओं की मर्यादाओं को मानने के हिमायती होने के बावजूद सब कसूर अपने बेटे पर थोप लेता है। घर का बेहाल अर्थ की वजह से है, मगर सारा इल्ज़ाम बेटे पर लगाया गया है। रामप्रसाद के जुमले में पोशीदा गुस्सा साफ साफ नजर आता है। घर को होटल कह डालने की बात उसके भीतरी दिल में पड़ी हुई आर्थिक बेचैनी है। बेटे के खिलाफ का गुस्सा आर्थिक परेशानी है। वह इतना बेचारा है कि इस आर्थिक दबाव से रिहाई पाने के लिए ही बेटे पर अपना पूरा गुस्सा उतरता है। आर्थिक विषमता घर में झगडा का सबब बन जाता है। परंपरा और रिवायत हर लम्हा मध्यवर्गीय खानदान की आज़ादी को रोकने में कामयाब सी दिखाई देती हैं। बेटा सिद्धार्थ पिता के उपदेशों से ऊब जाता है। पिता से उस का जो कथन है वह मध्यवर्गीय नई पीढ़ी की त्रासती की जीती जागती मिसाल है। " मेरी इन परेशानियों से बाबू जी को कुछ देना नहीं। उनके पास न दृष्टि है, न संवेदना कि उनका बेटा इन बदली परिस्थितियों के साथ तालमेल बिठाता रोज़ मरता है। यह सोचकर कि वह किस ओर बढ़े ?" (4) मध्य वर्गीय खानदानों के युवक भी निजी व खानदानी समस्याओं से छुटकारा पाने केलिए तड़पते रहते हैं। सिद्धार्थ इस तबके का नुमाइंदा किरदार है, जो अपनी व परिवार की उलझनों से टूटता हुआ दिखाई दे रहा है।

जगत राम सेवारत लिपिक है। उसकी चिंता राम प्रसाद से बिलकुल अलग है, राम प्रसाद आर्थिक बेचैनी को अपने बेरोजगारी बेटे पर इल्ज़ाम लगाकर बच पाना चाहता है, मगर जगत राम के सामने घर की बेरोजगारी नहीं, मगर अपनी तीन लड़कियों की ब्याह के खर्च व दयाजे की खौफ़नाक फिकर है। मुन्ना हाफ़िज़ के चार संतानें है। मध्यवर्गीय खानदान का हाफ़िज़ ने चौक में किताबों की एक दुकान खोल दी है। दो जून की रोटी इसी से वह कमा लेता है।

'ज़ीरो रोड' की औरतें भी 'आर्थिक खाते' की नजर में 'ज़ीरो' ही हैं। नसिरा शर्मा एक नया आर्थिक बयान समाज के पेशे नजर रखती है कि शोषण का शिकार उच्च, निम्न वर्ग की बनिस्बत मध्य वर्गीय औरतों को ही बनना पड़ता है। नाम में राधा और रानी होते हुए भी जीवन में राधारानी एक मामूली मध्य वर्गीय औरत है। उसका जीवन चहारदीवारी के भीतर घिरा हुआ है। पति आराम की ज़िंदगी काटता है तो औरत को घर का फर्ज़ निभाना पड़ता है। एक ही छत के भीतर एक आर्थिक तौर पर स्वतन्त्र है तो दूसरा परतंत्र है। यह उच्च और निम्न वर्ग से ज़्यादा मध्य वर्ग में ही होता है। औरत ही घर में परतंत्र है। पड़ोस की औरतों से राधारानी बातें करे तो भी पति के लिए वह नापसंद की बात बन जाती है। मगर अपनी नापसंद कभी पत्नी बाहर दिखा नहीं सकती। इसलिए वह अपने दिल पर पति को कोसता है तो फ़ौरन उसे अपनी परम्पराओं और रिवायतों की याद आती है। फिर थोड़ी ही देर में अपनी दिली बात के लिए ईश्वर से मुआफी मांगती है। उसका दिल खूब कमज़ोर ही है।

मध्य वर्गीय औरत तालीम हासिल करके भी, अच्छी नौकरी पाके भी शादी के मामले में बेमेल के खतरे में गिर जाती है। यह पढ़ी लिखी, नौकरी करने वाली औरतों के नासमझ की बात नहीं है, यह खुद को ना पहचानने की बात है। शादी के बारे में राधारानी का अपना साफ मत है " विवाहित जीवन समझौते और सामाजिक रणक्षेत्र का नाम है। सुख चैन योद्धा के भाग्य में कहाँ लिखा होता है। उसे तो रोज़ एक युद्ध लड़ना पड़ता है। जख्म छुपाकर भी हँसना पड़ता है। " (5) दरअसल शादी में समझौता कम और जंग ज़्यादा है। घर में हर दिन नया नया जंग होता है, औरतों की बेबसी यह है कि उसे हर दिन उन ज़ख्मों को सहकर मुस्कुराना पड़ता है।

नासीरा शर्मा समीर नामक किरदार के ज़रिए ठीक तरह से यह दिखाना चाहती है कि आधुनिक युग में भी बेवाओं की शादी के मामले में कोई बदलाव नहीं आया है। समीर की बीस साल की बहन बेवा है। समीर उसकी पुनः शादी को लेकर बहुत ही परेशान है। उसे अपने भरोसे पर कोई उम्मीद नहीं है। " कुँवारी लड़कियाँ जहाँ अच्छे वर के लिए बैठी रहती हैं, वहाँ विधवा का पुनर्विवाह आज भी मुश्किल है। " (6)

पहले प्रवासी मर्द ही होते थे, मगर आज बहुत सारी औरतें विदेश चली जाती हैं। घर की आर्थिक परेशानी को हल करने के लिए दुबई जानेवाली औरतों की ज़िंदगी की चर्चा नासिरा शर्मा ने इसमें किया है। कंपनी के मर्द लोग औरतों से जिन्सी सलूक करते हैं। आर्थिक परेशानी की वजह वह सब सब्र कर लेती है। दुबई पश्चिमी एशिया का मरकज़ ए सौदा है। नासिरा शर्मा बड़ा अफसोस जताती है कि दुबई की ग्लोबल तहज़ीब में जी कर औरत को मर्द की तरह आज़ादी बिल्कुल नहीं मिल जाती है। वहां कोई भी और किसी की बातों की परवाह नहीं करेगा। ग्लोबल विलेज होने की वजह से वहां कई तहज़ीब के लोग आते हैं। फिर भी सब औरत पर ही थोपे जाते हैं। मर्द की खुली आजादी का बयान नासीरा शर्मा ने कैथरिन के जरिए किया है। " सामने जो भी शेख नज़र आ रहा है, उसकी विदेशी पत्नी है। वे भी सर पर 'हिजाब' लिए हुए हैं। मगर विदेशी से विवाह करने की यह आज़ादी औरतों को नहीं है। " (7) लेकिन उपन्यासकार ने दूसरे सिरे से इन जुमलों के माने को छिपा के रखा है कि विदेशी औरतों को शेख से शादी करने की नसीब मिलती है, अगर विदेशी औरत उसकी रिवायत को माने तो। इस जगबीती में औरतों की बुरी माली हाल, बे मेल शादी, बेवाओं की परेशानी, दुबई में परंपरा व रिवायत के मुताबिक अभिशप्त जीवन काटने वाली औरतों की तस्वीरें सतही तौर पर न होकर गहरी तौर पर खींची गई हैं।

सांप्रदायिकता भारत की एक गंभीर समस्या है। मगर यह दुबई में नहीं है। इसलिए नहीं कि दुबई एक इस्लामिक वतन है, एक कारोबारी व तिजारती शहर है । जीरो रोड के चौक में 'अपना दल', 'समाजवादी पार्टी' व 'बहुजन समाज पार्टी' के पक्षधर ही ज़्यादा हैं , फिर भी साम्प्रदायिकता में कोई कमी नहीं है। यहां राजनैतिक लोग मज़हब के नाम पर चुनाव लड़ते हैं। उम्मीदवार और उनके लोग अपने दलों को उकसाते हैं। ज़ात, कौम और मज़हब का असर जंग ए चुनाव में पड़ जाता है। इसलिए दंगा फसाद होना मामूली बात है। इस उपन्यास में जगत राम, मुन्ना हाफ़िज़ आदि किरदार ही हिन्दू मुसलमान के बीच भाईचारे का रिश्ता कायम रखने की कोशिश करते हैं। दुबई तिजारती शहर है, वह मजहबी शहर नहीं है। अलग अलग देशों से इस तिजारती शहर दुबई में कारोबार करने के लिए आनेवाले लोगों को अपने अपने रीति रिवाज़ के मुताबिक़ जीने की आजादी है। जीरो रोड की दास्तां के एक सिरे पर इलाहाबाद है तो दूसरे सिरे पर दुबई है।

उपन्यासकार ने दुबई को एक कारोबारी एवं तिजारती शहर और इलाहाबाद को एक धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत के केंद्र के रूप में दर्शाया है। कुंभ मेला, गंगा नदी आदि के प्रति भारतीयों के दिलों में जो गहरा लगाव है, उसका बयान भी इस उपन्यास में मौजूद है। कुंभ मेला के विशाल बयान के जरिए नासिरा शर्मा यह भी बताना चाहती है कि भारतीय लोग धर्म के परे पर्वों, त्योहारों व मेलाओं को महत्व देने वाले हैं । आर्थिक मंदी बेरोज़गारी का सबब बन जाता है। भ्रष्टाचार सब कहीं

फैल जाता है। उच्च शिक्षा हासिल शुदा युव भी बोज़गारी के चक्कर पड़ जाते हैं। मध्य वर्ग के मां बाप इस संजीदगी बात के बारे में सोच कर खूब परेशान हो जाते हैं । आखिर मां बाप को अपने बेटे को नौकरी की तलाश में दुबई भेजना पड़ता है। सिद्धार्थ के पिता एजेंट से कहे तनाव व दर्द भरे जुमले यहां ज़रूर ही उल्लेखनीय है " मैं अपने पैर पर कुल्हाड़ी मार रहा हूँ। यह नाकारा लड़का जाने कब मुझे चिंताओं से मुक्ति देगा।" (8) पहले अर्थ कमाने के लिए लोग दुबई गए थे तो आज ज़िंदगी चलाने के लिए लोग जाते हैं। यानी हाल बेहतर नहीं है, बदतर होता जा रहा है। कारोबार में देशी विदेशी की फ़र्क़ बिल्कुल नहीं है । श्याम मनोहर भारतीय होकर भी देशी मज़दूरों के साथ अत्याचार करता है । मरे हुए मज़दूरों को हरजाना या मुआवज़ा देने के के लिए भी वह तैयार नहीं हो जाता है । श्याम मनोहर का कथन है " अगर मैं सबको हरजाना दिया तो लुट जाऊँगा। करुँगा वही जो करता आया हूँ। बाकी पासपोर्ट जाया कर उन्हें दो सप्ताह की गैर हाजरी में डाल दूँगा। दस को दिखाकर उन्हें हरजाना दे दूंगा।.....उनका (लाशों का) इंतज़ाम हो जाएगा। किसी को कानों कान खबर नहीं होगी। " (9) पूंजीवादी लोगों के लिए मज़दूर सिर्फ पैसा कमाने की मशीन है। मशीनों की मरम्मत तो करनी पड़ेगी, मगर मजदूरों की सेहत पर किसी को भी कोई परवाह नहीं। पैसे की लालच से ही नहीं, घर की परेशानियों की वजह ज़्यादा वक्त काम करने के लिए भी मज़दूर विवश जाता है, यह उसकी तन्दुरस्ती को खतरे में डाल देता है।

*

(अपनी नज़्म 'खाली खाता ' के साथ कुछ बातें। ...)

कोरोना वाइरस के / सख्त योरिश में भी / जान खतरे में डालके / हिन्दुस्तान के / हर लेबर चौक में / मज़दूर / दो जून के नान /
केलिए जम जाते हैं / यह मंज़र खूब दर्दनाक है / उनके पास
सिर्फ खाली खाता है / जीरो खाते से / वे क्या कर पायें ?

इस शोध लेख की तैयारी में जब मेरा दिल लगा गया था तो दुबई से लगातार खबरें आ रही थीं कि कोरोना वायरस दुबई शहर पर भी सख्त योरिश कर रही है। विदेश से आए हुए मजदूरों को वहां टिकना नामुमकिन की बात बन गई है और एकदम अपने वतन की तरफ जाना भी। कुछ साल से शुरू हुई आर्थिक मंदी सभी देशों पर हमला कर रही थी और वैसे ही दुबई कारोबारी शहर भी बचने का नाम नहीं ले रहा था। तेल की कीमत पर आई बड़ी गिरावट ने वहां के मजदूरों पर पानी फेर रहा था। मंदी के साथ कोरोना वायरस ने उसके हाल को एक बार फिर बदतर बना दिया है। नासिरा शर्मा ने जिस तरह की आर्थिक तंगी का बयान किया है, वह आसमान की तरफ बढ़ती जा रही है और इस उपन्यास के लिए उन्होंने 'जीरो रोड' नाम रखा है । शाह रोड अमीरों केलिए है, तेज़ रफ्तार रेल अमीरों केलिए है। (वतन के सीने से होकर तेज़ रफ्तार से दौड़नेवाली 'गरीब रथ ' सरकार की ज़बान में गुरबत में पड़े हुए लोगों केलिए है, कम कीमत की टिकट पर वातानुकूल डिब्बे में तेज रफ्तार से, आराम से, सुख चैन से सफ़र करने की सहूलियत 'गरीब रथ' वतन के गरीबों को देता है। मगर सच्चाई यह है कि गरीबों के लेबिल पर अमीरों को कम कीमत की टिकट पर यह एक अमन भरा आराम सफर देता है। योजना गरीब के नाम पर , सुविधा व सहूलियत अमीरों को।) आम रोड अवामो केलिए । आज यह आवाम आम रोड से, बे रफ्तार रोड से जीरो रोड पर आये हैं । 'जीरो खाता' ही उसके फिलहाल की आमदनी है। दुनिया के सब मज़दूर जीरो खाता लेके जीरो रोड पर खड़े होकर कोरोना के खिलाफ लड़ता है। आज यह जीरो खाता और जीरो रोड दुनिया में सब कहीं मौजूद है।

संकेत सन्दर्भ :

1. ज़ेरो रोड : विकिपीडिया
2. नासिरा शर्मा : ज़ीरो रोड, पृ. 74.
3. वही : पृ. 68
4 . वही : पृ. 78
5. वही : पृ. 24
6. वही : पृ. 335
7. वही : पृ. 324
8. वही : पृ. 168
9. वही : पृ. 258.